हिन्दी
वर्ग - 7
वसंत भाग - 2

8. शाम - एक किसान

(1)

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

शब्दार्थ - साफा = पगड़ी, पलाश = टेसू, सिमटना = सिकुड़ना, अचानक = एकाएक, आवाज देना = बुलाना, औंधी = उलट गई, डूबा = अस्त होना, छाना = फैलना।

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'वसंत भाग-2' में संकलित है। यह अंश 'शाम- एक किसान' कविता से लिया गया है। इसके कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हैं।

कवि ने किसान के रूप में जाड़े की शाम की प्राकृतिक दृश्य का चित्रण किया है। इस प्राकृतिक दृश्य में पहाड़-बैठे हुए एक किसान की भाँति दिखाई दे रहा है। आकाश उसके सिर पर बँधे साफे के समान, पहाड़ के नीचे बहती हुई नदी-घुटनों पर रखी चादर-सी, पलाश के पेड़ों पर खिले लाल फूल-जलती अँगीठी के समान, पूर्व क्षितिज पर घना होता अंधकार-झुँड में बैठी भेड़ों जैसा और पश्चिम दिशा में डूबता सूरज-चिलम पर सुलगती आग की भाँति दिख रहा है। यह पूरा दृश्य एक घटना में बदल जाता है, जब चिलम उलट जाती है, आग बुझ जाती है, धुआँ उठने लगता है, सूरज डूब जाता है, शाम ढल जाती है और रात का अँधेरा छा जाता है चारों ओर वातावरण में शांति छाई हुई है।

प्रश्नोत्तर -

i. इस कविता में शाम के दृश्य को किसान के रूप में दिखाया गया है- यह एक रूपक है। इसे बनाने के लिए पाँच एकरूपताओं की जोड़ी बनायी गई है। उन्हें उपमा कहते हैं। पहली एक रूपता आकाश और साफे में दिखते हुए कविता में 'आकाश का साफा' वाक्यांश आया है। इसी तरह तीसरी एकरूपता नदी और चादर में दिखाई गई है, मानो नदी चादर सी हो। अब आप दूसरी और पाँचवी एक रुपता खोजकर लिखिए।

उत्तर - (क) सूरज की चिलम। (ख) पलाश के जंगल की अँगीठी (ग) भेड़ों के गल्ले सा।

ii. शाम का दृश्य अपने घर की छत या खिड़की से देखकर बताइए-
(क) शाम कब से शुरु हुई? (ख) तब से लेकर सूरज डूबने में कितना समय लगा? (ग) इस बिच आसमान में क्या-क्या परिवर्तन आये?

उत्तर - अपने घर की छत या खिड़की से शाम का दृश्य देखने पर ज्ञात होता है कि
(क) गर्मी के दिनों में शाम साढ़े छः या पौने सात बजे शुरु हुई।
(ख) तब से सूरज डूबने में करीब आधे घंटे का समय लगा।

Scanned with CamScanner

(ग) इस बीच आकाश में निम्न परिवर्तन हुए - (2)

ii. धूप का प्रभाव कम होने से आसमान का पीलापन कम हुआ, उसकी जगह लाली बढ़ गई। पूरब दिशा का प्रकाश कमजोर पड़ने लगा तथा क्षितिज से अंधकार की चादर फैलती दिखने लगी। पक्षी कलरव करते, शाम होने की सूचना देते घोंसले की ओर लौटने लगे। सूरज डूबते-डूबते पश्चिम में चमकीला तारा शुक्र नजर आने लगा। पश्चिम दिशा में अब भी कुछ लालिमा बची थी।

iii. मोर के बोलने पर कवि को लगा कि जैसे, किसी ने कहा हो - 'सुनते हो', नीचे दिये गये पक्षियों की बोली सुनकर उन्हें भी एक या दो शब्दों में बाँधिए -

उत्तर -

पक्षी का नाम		ध्वनि (बोली)		अर्थ
कबूतर	-	गुटर गूँ	-	खत लाया हूँ।
कौआ	-	काँव-काँव	-	पाहुन आएँगे।
मैना	-	चैं-चैं	-	गाना सुन लो।
तोता	-	चीं-टीं-चीं	-	कोई आया।
चील	-	चीं-चीं	-	मैं भी हूँ।
हंस	-	क्श-क्श	-	मोती चुन लो।

भाषा की बात -

1. नीचे लिखी पंक्तियों में रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखिए -

(क) घुटनों पर पड़ी है नदी चादर-सी।

(ख) सिमटा बैठा है भेड़ों के गल्ले-सा।

(ग) पानी का परदा-सा मेरे आसपास था हिल रहा।

(घ) मँडराता रहता था एक मरियल-सा कुत्ता आसपास।

(ङ) दिल है छोटा-सा छोटी-सी आशा।

(च) घास पर फुदकती नन्ही-सी चिड़िया।

इन पंक्तियों में सा/सी का प्रयोग व्याकरण की दृष्टि से कैसे शब्दों के साथ हो रहा है?

उत्तर - चादर-सी, गल्ले-सा, और परदा-सा, इन पंक्तियों में सा/सी का प्रयोग संज्ञा के शब्दों के साथ हुआ है।

मरियल-सा, छोटा-सा और नन्ही-सी इसमें सा-सी का प्रयोग विशेषण शब्दों के साथ हुआ है।

इन पंक्तियों में नदी की तुलना चादर से, भेड़ों की तुलना गल्ले से, और पानी की तुलना परदे से की गई है। कुत्ते, दिल और चिड़िया की विशेषता क्रमश: मरियल, छोटा और नन्ही द्वारा बतायी गई है।

Scanned with CamScanner

ii. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग आप किन संदर्भों में करेंगे? प्रत्येक शब्द (उ) से दो-दो वाक्य बनाइए - औंधी, दहक, सिमटा।
उत्तर - औंधी - मुँह के बल या उलटा के अर्थ में।
(क) कमरे में टोकरी औंधी पड़ी है। (ख) कोप भवन में कैकेयी औंधी पड़ी थी।
दहक - प्रबल वेग होने के अर्थ में।
(क) मोहन क्रोध से दहक रहा था। (ख) अँगीठी में आग दहक रही थी।
सिमटा - सिकुड़ा हुआ के अर्थ में या समाप्त होने के अर्थ में,
(क) सीता रजाई में सिमटी हुई है। (ख) सोहन के घर का सारा काम सिमट लिया गया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न -
i. चिलम के रूप में किसका चित्रण किया गया है?
(क) पलाश का (ख) अँगीठी का (ग) सूर्य का (घ) पहाड़ का। उत्तर - (ग)
ii. किसान के घुटनों पर किसकी चादर पड़ी है?
(क) सागर की (ख) झील की (ग) नाले की (घ) नदी की। उत्तर - (घ)
iii. पहाड़ी पर बहती नदी कैसी प्रतीत होती है?
(क) मोतियों की माला के रूप में (ख) साफे के कपड़ा जैसी (ग) चादर जैसी (घ) किसान की धोती जैसी। उत्तर - (ग)
iv. पलाश को जंगल की अँगीठी क्यों कहा गया है।
(क) हरे सोने के कारण (ख) सुर्ख लाल फूलों के कारण (ग) दूर तक फैले होने के कारण (घ) पहाड़ के पास स्थित होने के कारण। उत्तर - (ख)
v. भेड़ों के झुंड-सा अंधकार कहाँ बैठा है?
(क) पूरब दिशा में (ख) पश्चिम दिशा में (ग) उत्तर दिशा में (घ) दक्षिण दिशा में
उत्तर - (क)

9. चिड़िया की बच्ची

जैनेंद्र कुमार

शब्दार्थ - कोठी = हवेली, व्यसन = बुरी आदत, रकाबी = कम गहरी प्लेटें, मसनद = एक बड़ा तकिया, गलीचे = कालीन, छटा = सुंदरता, तृप्ति = संतुष्टि, विनोद-चर्चा = मनोरंजक बात-चीत, आन = आकर, स्याह = काला, सत्ता = शक्ति, पर = पंख, स्वच्छंदता = आजादी, बेखटके = बिना डर के, संकोच = असमंजस, बोध हुआ = ज्ञात हुआ, चित्त = मन, रागिनियों = पत्नियां, वीरान = सूना, महामान्य = आदरणीय, निरी = एकदम, तृष्णा = चाहत, नादान = अज्ञान, खुशबू - सुगंध, जतन = उपाय, सुबकना = मंद आवाज में रोना, ढाढ़स बँधा = सांत्वना मिला, मींच = बंद करना।

Scanned with CamScanner

प्रश्न - अभ्यास

i. किन बातों से ज्ञात होता है कि माधवदास का जीवन संपन्नता से भरा था और किन बातों से ज्ञात होता है कि वह सुखी नहीं था ?

उत्तर - माधवदास का जीवन संपन्नता से भरा था क्योंकि उनके पास अपार सोना-चाँदी था। संगमरमर का बना उनका महल तथा महल के सामने एक सुंदर बगीचा था। महल में अनेक दास-दासियाँ थीं। वह चिड़ियों के लिए सोने का पिंजरा तथा सोने की कटोरी बनवा सकता था।

माधवदास सुखी नहीं था क्योंकि वह ख्याल ही ख्याल में संध्या को स्वप्न की भाँति गुजार देता था। चिड़िया के आने से वह बहुत प्रसन्न था। उसका महल सूना था क्योंकि वहाँ कोई चहचहाता नहीं था।

ii. माधवदास क्यों बार-बार चिड़िया से कहता है कि यह बगीचा तुम्हारा ही है ? क्या माधवदास निःस्वार्थ मन से ऐसा कह रहा था ? स्पष्ट करें।

उत्तर - माधवदास चाहता है कि चिड़िया सदा के लिए उसके बगीचे में ही बस जाये। इसी कारण वह कहता है यह बगीचा तुम्हारा ही है। माधवदास के इस कथन के पीछे उसका स्वार्थ छिपा था। वह चिड़िया को अपने महल में पिंजड़े में बंद करके रखना चाहता था ताकि उसकी सुंदरता को निहार सके तथा उसका चहचहाना सुन सके।

iii. माधवदास के बार-बार समझाने पर भी चिड़िया सोने के पिंजरे और सुख-सुविधाओं को कोई महत्व नहीं दे रही थी। दूसरी तरफ माधवदास की नजर में चिड़िया की जिद का कोई तुक न था। माधवदास और चिड़िया के मनोभावों के अंतर क्या-क्या थे ? लिखें।

उत्तर - चिड़िया की सुख-सुविधायें प्रकृति में निहित था। हवा, धूप और फूल ही उसकी संपत्ति थे। माँ, परिवार तथा घर उसके लिए सबसे सुखदायी थे। उसकी सारी संपन्नता उसकी स्वच्छंदता थी। उसे सोने-चाँदी से कुछ लेना-देना नहीं था। इन चीजों का लालच उसे उसके प्राकृतिक सुखों से वंचित कर देता है। यही कारण था कि वह माधवदास की बातों को कोई महत्व नहीं दे रही थी।

वहीं दूसरी तरफ माधवदास सुखों में लिप्त रहने वाले व्यक्ति थे। प्रकृति उनके लिए बस इतना ही मायने रखती थी कि वह बैठकर उसकी सुंदरता निहारते रहते थे। उनके लिए धन-दौलत और ताकत संसार की मूल्यवान वस्तुएँ थीं, जिनसे वे दुनिया पर राज कर सकते थे। इन कारणों से वह चिड़िया की जिद को मूर्खतापूर्ण समझ रहे थे।

Scanned with CamScanner

iv. कहानी के अंत में नन्ही चिड़िया का सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने की बात पढ़कर तुम्हें कैसा लगा? लिखें। (5)

उत्तर - नौकर के पंजे से नन्ही चिड़िया के भाग निकलने की बात सुनकर माधवदास के कपटी स्वभाव के बारे में पता चलता है। एक तरफ तो वह चिड़िया को प्यारी-प्यारी बातों में उलझाये रहता था, पर मन में वह चिड़िया को किसी तरह से पकड़ने के लिए दृढ़ संकल्प है। वह छल से चिड़िया को नौकर द्वारा पकड़वाना चाहता था। इससे 'मुँह में राम बगल में छुरी' वाली कहावत चरितार्थ होती है। इससे भी बुरा यह लगा कि वह मनुष्य तो स्वयं स्वतंत्र रहना चाहता है परन्तु अपनी खुशी के लिए पशु-पक्षियों की स्वतंत्रता का हनन करने से नहीं चुकता है। इसके लिए वह छल, बल तथा कपट हर प्रकार के साधन अपनाने को तैयार रहता है।

v. 'माँ मेरी बाट देखती होगी' - नन्ही चिड़िया बार-बार इसी बात को कहती है। आप अपने अनुभव के आधार पर बताइए कि हमारी जिंदगी में माँ का क्या महत्व है?

उत्तर - हमारे जीवन में माँ का स्थान सर्वोपरी है। माँ से ही जीवन के सारे सुख प्राप्त होते हैं। वह सारे कष्टों को स्वयं झेलती है, पर अपनी संतान पर आँच नहीं आने देती। माँ के साये में बच्चा अपने को सुरक्षित महसूस करता है। माँ का स्नेह एवं आशीष सदा बच्चों की सफलता में अपना योगदान देता है। माँ ईश्वर का रूप होती है। माँ को स्वर्ग से भी बढ़कर कहा गया है। यही कारण है कि शब्दों के हेर-फेर और दुनिया के रंग-ढंग से अनजान कोई भी महसूस बच्चा किसी भी प्रलोभन के बावजूद माँ से अलग रहने को तैयार नहीं होता है। इसी कारण से चिड़िया भी बार-बार माँ का स्मरण कर रही थी।

vi. इस कहानी का कोई और शीर्षक देना हो तो आप क्या देना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर - इस कहानी का अन्य शीर्षक 'सच्चा सुख' भी हो सकता है, क्योंकि इस कहानी के माध्यम से लेखक ने जीवन के सच्चे सुख की परिकल्पना सोने-चाँदी जैसी भौतिक वस्तुओं के बजाय स्वतंत्रता व माँ के आँचल के रूप में की है।

भाषा की बात —

1. 'तीनों पर' के प्रयोग तीन उद्देश्यों से हुए हैं। इन वाक्यों को आधार मान कर आप भी 'पर' का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनाइए जिनमें अलग-2 उद्देश्य के लिए 'पर' के प्रयोग हुए हों।

Scanned with CamScanner

उत्तर - (क) पर - (के ऊपर) - मेज पर किताब रखी है। (ख)
(ख) पर - (पँख) - सर्दी से अपनी रक्षा हेतु पक्षी अपना पर फैला लेते हैं,
(ग) पर - (लेकिन) - मैं स्टेशन गया था पर रेलगाड़ी निकल चुकी थी,
ii. पाठ में तैंने, छनभर, खुश करियो - तीन वाक्यांश ऐसे हैं जो खड़ीबोली हिन्दी के वर्तमान रूप में तूने, क्षणभर, खुश करना लिखे-बोले जाते हैं लेकिन हिन्दी के निकट की बोलियों में कहीं-कहीं इनके प्रयोग होते हैं। इस तरह के कुछ अन्य शब्दों की खोज कीजिए।
उत्तर - म्हारा = मेरा, मन्ने = मुझे, आ जयो = आ जाओ,
थारी = तुम्हारी, छोरा = लड़का।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

i. चिड़िया माधवदास के बगीचे में क्यों आयी थी?
(क) फव्वारा देखने (ख) कुछ देर आराम करने (ग) खिले फूलों को देखने
(घ) बगीचे की सुंदरता देखने। उत्तर - (ख)
ii. चिड़िया अपने घर से क्यों निकली थी?
(क) फूलों से बातें करने (ख) सूरज की धूप खाने (ग) हवा से खेलने
(घ) उपर्युक्त सभी। उत्तर - (घ)
iii. माधवदास प्रकृति की छटा निहारने के लिए कब बैठते हैं?
(क) प्रातःकाल (ख) सायंकाल (ग) दोपहर में (घ) दोपहर के बाद।
उत्तर - (ख)
iv. उस सुंदर चिड़िया की गर्दन का रंग कैसा था?
(क) लाल (ख) पीली (ग) हरी (घ) काली। उत्तर - (क)
v. उपवन में चिड़िया कहा आ बैठी?
(क) जमीन पर (ख) फव्वारे के पास (ग) गुलाब की टहनी पर
(घ) खिले फूल के पास। उत्तर - (ग)

10. अपूर्व अनुभव

तेत्सुको कुरियानागी

शब्दार्थ - द्विशाखा = दो शाखायें, अकसर = प्रायः, विपत्ता = सम्पत्ता, आँखों में न झाँकना = ध्यानपूर्वक न देखना, नजरें गड़ाए रखना = देर तक अत्यंत ध्यान से देखना, उल्लास = प्रसन्नता, हताशा = निराशा, हैरान = आश्चर्य, तरबतर = गीला, रमना = लीन होना, जूझना = संघर्ष करना, झिझकता = हिचकिचाता हुआ, झलक = दर्शन, बेहद = ज्यादा, मौका = अवसर।

Scanned with CamScanner

प्रश्न - अभ्यास

i. यासुकी चान को अपने पेड़ पर चढ़ाने के लिए तोत्तो-चान ने अथक प्रयास क्यों किया ? लिखिए ।

उत्तर - यासुकी-चान तोत्तो-चान का दोस्त था । उसे पोलियो ने मार दिया था इसलिए वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता था । तोत्तो-चान ने उससे वादा किया था कि वह उसे अपने पेड़ पर चढ़ाएगी । उसकी इच्छा थी कि वह यासुकी-चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित कर तमाम नयी चीजें दिखाये, यही कारण था कि उसने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ाने के लिए अथक प्रयास किया ।

ii. दृढ़ निश्चय और अथक परिश्रम से सफलता पाने के बाद तोत्तो चान और यासुकी-चान को अपूर्व अनुभव मिला, इन दोनों के अपूर्व अनुभव कुछ अलग-2 थे । दोनों में क्या अंतर रहे ? लिखिए ।

उत्तर - दृढ़ निश्चय और अथक परिश्रम से सफलता पाने के बाद तोत्तो चान और यासुकी-चान को अपूर्व अनुभव मिला, लेकिन दोनों के अनुभव अलग-अलग थे । तोत्तो-चान पहले कई बार पेड़ पर चढ़ चुकी थी पर पहली बार अपनी अपाहिज दोस्त को वहाँ तक चढ़ने में मदद की । इस प्रयास में सफलता से उसे अत्यंत खुशी और संतुष्टि प्राप्त हुई इस मुश्किल कार्य को कर लेने से उनका स्वयं पर विश्वास भी बढ़ा । वही दूसरी ओर यासुकी-चान को पहली बार पेड़ पर चढ़कर अपूर्व खुशी मिली । उसने जाना कि पेड़ पर चढ़ना क्या होता है । उसने वहाँ से एक नयी दुनिया देखी ।

iii. पाठ में खोजकर देखिए कि कब सूरज का ताप यासुकी-चान और तोत्तो चान पर पड़ रहा था, वे दोनों पसीने से तरबतर हो रहे थे और कब बादल का एक टुकड़ा उन्हें छाया देकर कड़कती धूप से बचाने लगा था । आपके अनुसार इस प्रकार परिस्थिति के बदलने का कारण क्या हो सकता है ?

उत्तर - तोत्तो-चान यासुकी-चान को तिरछी सीढ़ी के सहारे पेड़ पर चढ़ाने का प्रयास कर रही थी । यासुकी-चान ने पेड़ की ओर देखते हुए निश्चय के साथ जब अपना पाँव उठाकर सीढ़ी पर रखा तब सूरज का ताप उनदोनों पर पड़ रहा था । दोनों कड़ी मेहनत के कारण तरबतर हो रहे थे । परिश्रम के बावजूद दोनो पेड़ की द्विशाखा पर पहुँच गये । जब तोत्तो-चान यासुकी चान को पेड़ पर खींच रही थी तो बादल का एक टुकड़ा बीच में आकर उन्हें छाया दे रहा था । मेरे अनुसार इस बदलाव का कारण प्रकृति की सहृदयता थी ।

Scanned with CamScanner

iv. 'यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह --- अंतिम मौका था।' इस अधूरे वाक्य को पूरा कीजिए और बताइए कि लेखिका ने ऐसा क्यों लिखा होगा?

उत्तर - पूरा वाक्य है - "यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका है।" यासुकी-चान पोलियो से पीड़ित था। वह अपने-आप पेड़ पर नहीं चढ़ सकता था। वह तोत्तो-चान की मदद से पेड़ पर चढ़ा। तोत्तो-चान ने बहुत ही ज्यादा हिम्मत से उसे पेड़ पर चढ़ाया। यासुकी-चान चोरी-छिपे ही तोत्तो-चान की सहायता से पेड़ पर चढ़ा था। यदि किसी को पता लग जाता तो उसे डाँट खानी पड़ती। इसी कारण यासुकी-चान के इस प्रयास को लेखिका ने पहला और अंतिम मौका माना है।

भाषा की बात

i. द्विशाखा शब्द द्वि और शाखा के योग से बना है। द्वि का अर्थ है दो और शाखा का अर्थ है - डाल। द्वि की भाँति आप त्रि से बनने वाले शब्द का त्रिकोण जानते हैंगे। त्रि का अर्थ होता है - तीन। इस प्रकार चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस संख्यावाची संस्कृत शब्द उपयोग में अक्सर आते हैं। इन संख्यावाची शब्दों की जानकारी प्राप्त कर देखिए कि इन शब्दों को क्रमशः अंग्रेजी संख्या के नामों से कुछ मिलती है, जैसे हिन्दी - आठ, संस्कृत - अष्ट, अंग्रेजी - एट।

उत्तर -

संख्या	हिन्दी	संस्कृत	संख्यावाची	अंग्रेजी
4	चार	चत्वार:	चतुर्भुज, चतुरानन	फोर
5	पाँच	पंचम	पंचभुज, पंचानन	फाइव
6	छः	षट	षटकोण, षडानन	सिक्स
7	सात	सप्त	सप्तपदी, सप्तर्षि	सेवन
8	आठ	अष्ट	अष्टभुज, अष्टाध्यायी	एट
9	नौ	नव	नवरंग, नवरात्र	नाइन
10	दस	दश	दशानन, दशभुज	टेन

ii. पाठ में 'ठिठियाकर हँसने लगी' 'पेट से खिलखिलाने लगी' जैसे वाक्य आए हैं। ठिठियाकर हँसने का मतलब आप अवश्य अनुमान लगा सकते हैं। ही-ही हँसना या ठठा मारकर हँसना बोलचाल में प्रयोग होता है। इनमें हँसने की ध्वनि के एक खास अंदाज को हँसी का विशेषण बना दिया गया है। साथ ही ठिठियाना और खिलखिलाना शब्द में 'आना' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। इस प्रत्यय से फिलमाना शब्द भी बन जाता है। 'आना' प्रत्यय से बनने वाले चार सार्थक शब्द लिखिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर - मूल शब्द - आना प्रत्यय जोड़ने से बने शब्द

मूल शब्द	आना प्रत्यय जोड़ने से बने शब्द
अपना	अपनाना
शर्म	शर्माना
जुर्म	जुर्माना
धक्का	धकियाना

बहुविकल्पीय प्रश्न -

i. 'अगर बड़े सुनते तो जरूर डाँटते' - तात्तो-चान को बड़े क्यों डाँटते ?

(क) बिना बताये घर से बाहर जाने के लिए (ख) छुट्टियों में स्कूल जाने के लिए (ग) मोटे से पेड़ पर चढ़ने के लिए (घ) पोलियोग्रस्त यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाने के लिए। उत्तर - (घ)

ii. यासुकी-चान का घर कहाँ था ?

(क) डेनेनचोफु में (ख) तोमोए में (ग) कुहोन्बुत्सु में, (घ) हिरोशिमा में।

उत्तर - (क)

Scanned with CamScanner

iii. तोत्तो-चान ने अपनी योजना का सच सर्वप्रथम किसे बताया ? (10)
(क) यासुकी-चान को (ख) अपनी माँ को. (ग) यासुकी-चान की माँ को (घ) रॉकी को।
उत्तर - (घ)
iv. तोमोए में बच्चे पेड़ को कौन सी सम्पत्ति मानते हैं ?
(क) सार्वजनिक (ख) पराई (ग) निजी (घ) पारिवारिक सम्पत्ति।
उत्तर - (ग)
v. तोत्तो-चान ने एक साहसपूर्ण कार्य करने का निर्णय किया, जिसका पता---- था।
(क) उसकी माता को (ख) उसके पिता को (ग) उसके मित्र को (घ) किसी को भी नहीं।
उत्तर - (घ)

11· रहीम के दोहे
(रहीम)

शब्दार्थ- कोहि = कहे, बनत = बनते हैं, बहु = अनेक, रीत = विधि
जे = जो, तेई = वे ही, परे = पड़ना, जात बहि = बह जाता है
तजि = त्यागकर, मोह = प्रेम, तऊ = तब भी, छोह = स्वभाव
पान = पानी, परकाज = दूसरों का काम, सचहि = इकट्ठा करना,
सुजान = सज्जन लोग, थोथे-बादर = जल विहिन बादल,
बहरात = गहराना, भए = हो गये, सी = तरह, मेह = बादल,
परे = पड़ गये, सहि = सहन करना, त्यों = उसी तरह।

प्रस्तुत अंश रहीम के दोहे से लिया गया है। इसके कवि रहीम हैं।

कवि का कहना है कि मनुष्य के पास जबतक ऐश्वर्य रहता है तबतक बहुत से लोग अनेक प्रकार से उसके अपने बनने की कोशिश करते हैं। सच्चे मित्र तो वे होते हैं जो विपत्ति के समय में साथ नहीं छोड़ते हैं।

वे कहते हैं कि यदि मछलियों को पकड़ने के लिए हम सागर या नदी में जाल डालते हैं तो जाल से पानी बह जाता है, उसे मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता। ऐसी स्थिति में मछलियाँ पानी से अपना मोह या प्रेम नहीं त्याग पाती हैं तथा वे पानी के अभाव में अपना प्राण त्याग देती हैं, कवि का कहना है कि प्रकृति सदा से ही परोपकारी स्वभाव की रही है। प्रकृति के अंग अपना फल स्वयं नहीं खाते हैं, तालाब अपना पानी स्वयं नहीं पीता। पेड़ अपना फल तथा तालाब अपना पानी दूसरों के लिए धारण करते हैं। इसी प्रकार सज्जन व्यक्ति भी अपनी संपत्ति का संचय दूसरों के लिए ही करते हैं।

कवि रहीम कहते हैं कि कुछ धनी संपन्न होते हुए जिन बातों, आदतों का आदि होते हैं, वे संपन्नता चले जाने पर भी उन आदतों को नहीं छोड़ पाते हैं और न अपने उन दिनों की बड़बोलेपन की बातें ठीक उसी प्रकार करते हैं, जैसे क्वार माह में जलहीन बादल गरजते हैं।

रहीम का कहना है कि मनुष्य का शरीर भी परिस्थितियों के अनुसार खुद को समायोजित कर लेता है। इस संबंध में कवि कहते हैं कि शरीर को सर्दी, गर्मी, वर्षा अर्थात् विषम स्थितियों में कठिनाईयों को उसी प्रकार सहना पड़ता है, जैसे धरती सर्दी, गर्मी, वर्षा की अनेक कठिनाईयों को सहन करती है।

प्रश्नोत्तर –

i. पाठ में दिये गये दोहों की कोई पंक्ति कथन है और कोई कथन को प्रमाणित करने वाला उदाहरण। इन दोनों प्रकार की पंक्तियों को पहचान कर अलग-अलग लिखिए।

उत्तर - पाठ में वर्णित पहले और दूसरे दोहे में किसी तरह का उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया गया है। ये दोनों दोहे कथन मात्र हैं।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह॥

तीसरे, चौथे एवं पाँचवे दोहे की दूसरी पंक्तियों में कथन है और पहली पंक्तियों में उसका उदाहरण वर्णित है।

तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति-सचहिं सुजान॥

धोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात॥

धरती की-सी रीत है, सीत, घाम औ मेह।
जैसी परे सो सहि रहै, त्यों रहीम यह देह॥

ii. रहीम ने क्वार में गरजने वाले बादलों की तुलना ऐसे निर्धन व्यक्तियों से क्यों की है, जो पहले कभी धनी थे और बीती बातों को बताकर दूसरों को प्रभावित करना चाहते हैं? दोहे के आधार पर आप सावन के बरसने और गरजने वाले बादलों के विषय में क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर - क्वार मास में दिखाई देने वाले बादलों की गरज खोखली होती है क्योंकि वे बरसकर कुछ दान नहीं देते, उसी प्रकार ऐसे निर्धन व्यक्ति जो अपने बीते हुए सुखी

Scanned with CamScanner

दिनों की बात करते रहते हैं, उनकी बातें भी बेकार और वर्तमान (3)
परिस्थितियों में अर्थहीन होती हैं। जिस प्रकार क्वार माह में बादल
केवल गरजते हैं, परन्तु उनके पास जल नहीं होता, वैसे ही व्यक्ति
केवल पुरानी बातें करते हैं, उनके पास धन नहीं होता।
दोहे के आधार पर सावन के बादल को धनी तथा क्वार के
गरजनेवाले बादल निर्धन कहे जा सकते हैं।

भाषा की बात –

i. निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित हिन्दी रूप लिखें –
बिपति, बादर, मछरी, सीत।

उत्तर – बिपति – विपत्ति (ब – व)
बादर – बादल (र – ल)
मछरी – मछली (र – ल)
सीत – शीत (स – श)

ii. नीचे दिये गये उदाहरण पढ़िए –
(क) बनत बहुत बहु रीत। (ख) जाल परे जल जात बहि।
उपर्युक्त उदाहरणों की पहली पंक्ति में 'ब' का
प्रयोग कई बार किया गया है तथा दूसरी में 'ज' का प्रयोग,
इस प्रकार बार-बार एक ध्वनि के आने से भाषा की सुंदरता
बढ़ जाती है। वाक्य रचना की इस विशेषता के अन्य उदाहरण
खोजकर लिखिए।

उत्तर – (क) संपति-सचहिं सुजान। (ख) पीपल पावन पिला सरीखा,
(ग) नीम ननद-ननदोई-सा। (घ) पीपर पात सरिस मन डोला,
(ङ) तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

बहुविकल्पीय प्रश्न –

i. मछलियाँ जल के प्रति अपना सच्चा प्रेम कैसे प्रकट करती हैं,
(क) पानी के साथ रहकर (ख) अपनी जान देकर (ग) पानी को
जाल से बाहर कर (घ) जाल में स्वयं फँसकर। उत्तर – (ख)

ii. पेड़ अपना फल स्वयं क्यों नहीं खाते हैं?
(क) भूख न होने के कारण (ख) उनके बिना मुँह न होने के कारण
(ग) परोपकारी स्वभाव होने के कारण (घ) फल अच्छे न होने के कारण।
उत्तर – (ग)

iii. सज्जन संपति क्यो एकत्र करते हैं?

(क) दूसरों के कार्यों के लिए (ख) अपनी सुख-सुविधा के लिए (14)
(ग) पक्षी के लिए दान देते हुए (घ) संपत्ति एकत्र करना उनका स्वभाव होने के कारण। उत्तर-(क)
iv. किस महीने में बादलों को धोखा बताया गया है?
(क) आषाढ़ (ख) क्वार (ग) सावन (घ) भादो। उत्तर-(ख)
v. सच्चे मित्र की विशेषता इनमें से क्या है?
(क) सुख में साथ देने वाला (ख) विपत्ति में साथ निभाने वाला
(ग) हमारी हाँ में हाँ मिलाने वाला (घ) हमारे आस-पास रहने वाला
उत्तर - (ख)

12. कँचा

(टी० पद्मनाभन)

शब्दार्थ - घनी = सघन, आकृष्ट = ध्यान खींचना, कँचे = काँच की गोलियाँ, स्पर्श = छूना, अहसास = अनुभव, मात खाना = हारना, सबक = पाठ, खामोश = चुप, साँस रोके रहना = चुपचाप देखना, कर्मठ = कार्य में कुशल, चेहरा देखकर समझना = चेहरे पर आये भावों से अनुमान लगा लेना, जबान पर जवाब होना = कुछ कहने की चेष्टा करना, सकपकाना = चकित होना, आँखों में चिनगारियाँ सुलगना = क्रोध फूलना, सुबकना = हिचकी लेकर रोना, चिकोटी काटना = चुटकी काटना, झिझकता = संकोच करता।

प्रश्नोत्तर -

i. कँचे जब जार से निकलकर अप्पू के मन में समा जाते हैं, तब क्या होता है?

उत्तर - कँचे जब जार से निकलकर अप्पू के मन की कल्पना में समा जाते हैं तो उसे जार और कँचों के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता है। दुकान में रखा कँचों से भरा जार उसे प्रतीत होता है, जैसे आकाश से भी बड़ा हो गया हो। वह उसके अंदर चला जाता है। वहाँ उसे कोई बच्चा दिखाई नहीं देता है। फिर भी वह बहुत खुश है क्योंकि उसे अकेले खेलने की आदत है। वह वहाँ अपने चारों ओर कँचे बिखेरकर बड़े मजे से खेलने लगता है। हरी लकीर वाले सफेद गोल कँचे इस तरह उसके दिमाग पर छा गये कि कक्षा में भी वह पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे सका। इस कारण उसे सजा भी मिली।

Scanned with CamScanner

ii. दुकानदार और ड्राइवर के सामने अप्पू क्या स्थिति है। (15)
वे दोनों उसे देखकर पहले परेशान होते हैं, फिर हँसते हैं। कारण लिखें,
उत्तर - दुकानदार और ड्राइवर के सामने अप्पू एक निरीह, मासूम बच्चा है। वे दोनों उसकी मासूमियत को जल्दी समझ लेते हैं। दुकानदार पहले उससे परेशान था क्योंकि वह उसके दुकान में खड़ा कैंचों को देखे जा रहा था, खरीद नहीं रहा था। उसकी हरकतों से दुकानदार को चिंता हुई कि वह जार गिरा कर तोड़ न डाले। लेकिन स्कूल से लौटते समय अप्पू जब दुबारा उसकी दुकान पर आता है तो दुकानदार हँस पड़ता है। वह समझ जाता है कि अप्पू कैंचे खरीदने ही आया है। ड्राइवर अप्पू से परेशान था क्योंकि अप्पू गाड़ियों की परवाह किये बिना सड़क पर बैठ कर बिखरे कैंचे एकत्र कर रहा था। कार के हार्न की आवाज सुनकर जब अप्पू भोलेपन से हँसकर उसे अपना कैंचे दिखाता है तो ड्राइवर उसकी मासूमियत देख हँस पड़ता है।

iii. मास्टर जी की आवाज अब कम ऊँची थी। वे रेलगाड़ी के बारे में बता रहे थे। मास्टर जी की आवाज धीमी क्यों होगी? लिखिए।
उत्तर - शुरुआत में मास्टर जी पाठ पढ़ाने की मुद्रा में थे, इसलिए वे ऊँची आवाज में बात कर थे, परन्तु जब उन्हें लगा कि सब बच्चे ध्यानमग्न हो गये हैं तब उन्होंने पाठ समझाने के लिए अपनी आवाज को धीमा कर लिया।

भाषा की बात -

1. अगले पेज पर दिये गये वाक्यों में रेखांकित मुहावरे किन भावों को प्रकट करते हैं? इन भावों से जुड़े दो-दो मुहावरे बताइए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।
माँ ने दाँतो तले उँगली दबाई।
सारी कक्षा साँस रोके हुए उसी तरफ देख रही है।
उत्तर - दाँतो तले उँगली दबाना - आश्चर्य करना।
(क) मुँह खुला रह जाना - उसकी हाजिर जवाबी सुनकर मेरा मुँह खुला रह गया।
(ख) हक्का-बक्का होना - अपने दादा जी मृत्यु का समाचार सुनकर मैं हक्का-बक्का रह गया।

Scanned with CamScanner

साँस रोके हुए - भयभीत

(क) दम साधे हुए - सारे विद्यार्थी दम साधे हुए परीक्षा परिणाम का इंतजार कर रहे थे।

(ख) कंठ सूख जाना - अपना झूठ पकड़े जाने के भय से मेरा कंठ सूख गया।

ii. विशेषण कभी-कभी एक से अधिक शब्दों के भी होते हैं। नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित हिस्से क्रमशः रकम और कंचे के बारे में बताते हैं, इसलिए वे विशेषण हैं।

पहले कभी किसी ने इतनी बड़ी रकम से कंचे नहीं खरीदे। बढ़िया सफेद गोल कंचे।

इस प्रकार निम्न विशेषणों से वाक्य बनाइए -

ठंडी अँधेरी रात - उस ठंडी अँधेरी रात में ट्रेन छूट जाने के कारण मुझे बहुत परेशानी उठानी पड़ी।

खट्टी-मीठी गोलियाँ - फेरीवाला बच्चों को खट्टी-मीठी गोलियाँ देता था,

ताजा स्वादिष्ट भोजन - घर का बना ताजा स्वादिष्ट भोजन खाकर मन तृप्त हो गया।

स्वच्छ रंगीन कपड़े - आज हमें स्वच्छ रंगीन कपड़े पहनकर विद्यालय के उत्सव में शामिल होना है।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

i. अप्पू का सारा ध्यान किसकी कहानी पर केंद्रित था?
(क) लोमड़ी और सारस (ख) सियार और ऊँट (ग) लोमड़ी और कौए (घ) सियार और कौए। उत्तर - (घ)

ii. उसके पिताजी क्या लाकर नहीं देते?
(क) पिपरमेंट (ख) बिस्कुट (ग) कंचे (घ) चॉकलेट। उत्तर - (ग)

iii. अप्पू के कंचे आकार में किसके समान लग रहे थे?
(क) नींबू के (ख) आँवले के (ग) टमाटर के (घ) बेर के।
उत्तर - (ख)

iv. अप्पू बिना कंचे लिए स्कूल की ओर क्यों दौड़ गया?
(क) जॉर्ज की आवाज सुनकर (ख) स्कूल में प्रार्थना की आवाज सुनकर (ग) दुकानदार की डाँट सुनकर (घ) स्कूल की घंटी सुनकर। उत्तर - (घ)

v. उस दिन कक्षा में पढ़ाया जानेवाला 'रेलगाड़ी' नामक पाठ पृष्ठ पर था। (क) सैंतीस (ख) छत्तीस (ग) उनतालीस (घ) अड़तीस।
उत्तर - (क)

Scanned with CamScanner

13. एक तिनका

(अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध')

शब्दार्थ - घमंड = अभिमान, ऐंठा हुआ = अकड़ा हुआ, मुँडेर = दीवार और छत का निकला हुआ भाग, तिनका = घास का छोटा टुकड़ा, सिकुड़ना = संकोच करना, बेचैन होना = व्याकुल होना, मूँठ = कपड़े का कोना, पाँव भागना = खामोशी से भागना, ढब = तरीका, समझ = बुद्धि, ताना देना = व्यंग्यपूर्ण चुटकीली बातें कहना।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने अपनी कविता 'एक तिनका' में कभी भी घमंड नहीं करने का संदेश दिया है क्योंकि घमंडी का सिर हमेशा नीचा होता है।

कवि का कहना है कि एक दिन वह अपने घर मुंडेर पर बैठा स्वयं पर गर्व कर रहा था। वह सोचता है कि कोई भी उस का कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। तभी अचानक दूर से एक तिनका उड़ते हुए आया तथा उसकी में पड़ गया।

कवि कहता है कि उड़ते तिनके के आँख में पड़ते ही वह व्याकुल हो गया, वह सिसक उठा। उसकी आँख में दर्द होने लगा। उसकी आँख लाल हो गई। उसे पीड़ा होने लगी। कुछ लोग कपड़े को लपेटकर आँख से तिनका निकालने का प्रयास करने लगे। पीड़ा के मारे उसका बुरा हाल हो रहा था। ऐसी दशा में उसकी सारी अकड़ या घमंड गायब हो चुका था।

कवि कहता है कि अनेक प्रयास करने पर भी किसी तरह से जब तिनका निकल गया तब मेरी बुद्धि ने मुझसे व्यंग्यपूर्ण बातें करते हुए कहा, "तू किसलिए इतना अकड़ रहा था? तू किस बल पर ऐंठ दिखा रहा था? तेरा घमंड तोड़ने के लिए तो यह एक छोटा तिनका ही काफी है"।

प्रश्नोत्तर —

(1) नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को सामान्य क्रम में बदलिए-

(क) एक दिन जब वह मुंडेर पर खड़ा था।

(ख) आँख भी लाल होकर दुखने लगी।

(ग) बेचारी ऐंठ दबे पाँव भागी।

(घ) जब तिनका किसी ढब से निकल गया।

(ङ) 'एक तिनका' कविता में किस घटना की चर्चा की गई है, जिससे घमंड नहीं करने का संदेश मिलता है?

Scanned with CamScanner

उत्तर – 'एक तिनका' कविता में घमंड से भरे कवि की आँखों में पड़ा एक तिनका उसे बेचैन कर देता है। उसका सारा घमंड चूर हो जाता है। किसीतरह लोग कपड़े की नोंक से उसकी आँख में पड़ा तिनका निकालते हैं तो कवि सोच में पड़ जाता है कि आखिर उसे किस बात का घमंड था, जो एक तिनके ने तोड़ दिया। इस घटना से घमंड नहीं करने का संदेश मिलता है क्योंकि ऐसे घमंड का क्या लाभ जो एक ज़रा से तिनके की वजह से चूर-चूर हो जाए।

iii. आँख में तिनका पड़ने के बाद घमंडी क्या दशा हुई?

उत्तर – आँख में तिनका पड़ने के बाद घमंडी परेशान हो गया। उसे पीड़ा होने लगी और उसकी सारी ऐंठ गायब हो गई।

iv. घमंडी की आँख से तिनका निकालने के लिए उनके आसपास लोगों ने क्या किया?

उत्तर – घमंडी की आँख से तिनका निकालने के लिए आसपास के लोगों ने कपड़े को लपेटकर मूँठ बनाया और वे उसकी मदद से आँख में पड़ा तिनका निकालने का प्रयास करने लगा।

v. 'एक तिनका' कविता में घमंडी को उसकी 'समझ' ने चेतावनी दी–

ऐंठता तू किस लिए इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

इसी प्रकार की चेतावनी संत कबीरदास जी ने भी दी है –

तिनका कबहूँ न निंदिए, पाँव तले जो होय।
कबहूँ उड़ि आँखिन परै, पीर घनेरी होय॥

इन दोनों में क्या समानता है और क्या अंतर है? लिखिए।

उत्तर – कविता में वर्णित उपर्युक्त पंक्ति में यह चेतावनी दी है कि घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि एक तिनका भी घमंड तोड़ने के लिए बहुत होता है।

संत कबीर द्वारा लिखे गये दोहे का अर्थ है कि कभी पैरों के नीचे पड़े हुए तिनके की निंदा नहीं करनी चाहिए अर्थात उसे छोटा नहीं समझना चाहिए क्योंकि जब वह उड़कर आँख में पड़ता है तो बहुत कष्ट होता है।

उपर्युक्त दोनों कथनों में तिनके की बात की गई है और उसे मनुष्य के घमंड को तोड़ता हुआ दिखाया गया है। इनमें यही समानता है।

दोनों कथन में अंतर यह है कि हरिऔध द्वारा लिखी पंक्तियों में किसी

भी प्रकार के घमंड से बचने की चेतावनी दी गई है क्योंकि एक तिनका (19)
भी हमारे घमंड को तोड़ने की शक्ति रखता है। वहीं दूसरी तरफ संत कबीर
कहते हैं कि किसी भी तिनके को छोटा नहीं समझना चाहिए क्योंकि वह भी
आँखों में पड़कर असहनीय कष्ट प्रदान करने की शक्ति रखता है।

भाषा की बात –

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

धप से, टप से, थर से, फुर से, सन से।

(क) मेढ़क पानी में धप से कूद गया।

(ख) नल बंद होने के बाद पानी की एक बूँद टप से चू गई।

(ग) शोर होते ही चिड़िया फुर से उड़ी।

(घ) ठंडी हवा सन से गुजरी, मैं ठंड में थर से काँप गया।

बहुविकल्पीय प्रश्न –

i. तिनका कहाँ आ गिरा?
(क) कवि की आँख में (ख) कवि की नाक में (ग) कवि की हथेली पर
(घ) कवि के बगल में। उत्तर – (क)

ii. तिनका पड़ने पर कवि की क्या दशा हुई?
(क) व्याकुलता बढ़ गई (ख) आँख लाल हो गई (ग) आँख में पीड़ा
होने लगी (घ) उपर्युक्त सभी। उत्तर – (घ)

iii. लोगों ने वह तिनका कैसे निकाला?
(क) फूँक मारकर (ख) पानी से धोकर (ग) कपड़े की मूँठ बनाकर (घ) अंगुली
की सहायता से। उत्तर – (ग)

iv. तिनका पड़ने का कवि के घमंड पर क्या प्रभाव पड़ा?
(क) घमंड बढ़ गया (ख) घमंड घट गया (ग) यथावत रहा (घ) उड़न छू गया
उत्तर – (ख)

v. कवि पर किसने व्यंग्य किया?
(क) बुद्धि ने (ख) आस-पास के लोगों ने (ग) तिनका निकालने वाले ने
(घ) घमंड ने। उत्तर – (क)

14. खान पान की बदलती तस्वीर

(प्रयाग शुक्ल)

शब्दार्थ – संस्कृति = रीति-रिवाज, बदलाव = परिवर्तन, सीमित = संकुचित, ढाबा = रोटी की दुकान, अजनबी = अपरिचित, विज्ञापित = विज्ञापन में दिखाया हुआ, रसभरी = सरस, मसलन = जैसे, साहबी ठिकानों = धनी लोगों के घरों तक, भागमभाग = व्यस्तता, कमरतोड़

महँगाई = असहनीय महँगाई, वंचित करना = छीन लेना, सकारात्मक रूप = स्वीकृति का सूचक, निखालिस = शुद्ध, भाषा-भूषा = किसी समाज विशेष में प्रचलित शब्दावली, आम = सामान्य, कड़वा सच = असलियत, प्रीतिभोज = दावत, अनुकूल = माफिक, पुनरुद्धार = फिर से बढ़ाना,

प्रश्नोत्तर -

i. खानपान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का क्या मतलब है। अपने घर के उदाहरण देकर इसकी व्याख्या करें।

उत्तर - खानपान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का मतलब है स्थानीय और विदेशी व्यंजनों के खानपान का आनंद उठाना, उसकी गुणवत्ता तथा स्वाद बनाये रखने के साथ ही देश के अन्य भागों तथा विदेशी पकवानों को पकाना, खाना और उसके स्वाद का आनंद लेना। मैं एक उत्तर भारतीय हूँ, परन्तु आज मेरे घर में जितनी सरलता से रोटी-दाल और सब्जी पकाया जाता है, उतनी ही सहजता से दक्षिण भारत में व्यंजन इडली डोसा, साँभर आदि बनाये जाते हैं। इतना ही नहीं हम विदेशी व्यंजन जैसे बर्गर, नूडल्स भी बड़ी रुचि से खाते हैं। लेखक के शब्दों में यही मिश्रित संस्कृति है।

ii. खानपान में बदलाव के कौन से फायदे हैं? फिर लेखक इस बदलाव को लेकर चिंतित क्यों है?

उत्तर - खानपान के बदलाव के अनेक फायदे हैं, जैसे-

(क) खानपान में स्थानीय व्यंजनों का प्रचार-प्रसार बढ़ गया।

(ख) स्थानीय व्यंजनों जैसे इडली-डोसा का स्वाद लेने अब दक्षिण भारत जाने की जरुरत नहीं है।

(ग) खाने की मेज पर व्यंजनों की विविधता बढ़ गई है।

(घ) कम समय में पकनेवाले व्यंजन की जानकारी तथा उपयोग बढ़ गया।

(ङ) इससे राष्ट्रीय एकता मजबूत हुई है।

फिर भी लेखक इस बदलाव से चिंतित है क्योंकि-

(क) कुछ स्थानीय व्यंजन लुप्त होने के करीब हैं।

(ख) युवा पीढ़ी विदेशी व्यंजनों के सामने स्थानीय व्यंजनों की महत्ता कम समझ रहे हैं।

(ग) स्थानीय व्यंजन तथा पकवान होटलों की वस्तु बनते जा रहे हैं।

(घ) नयी पीढ़ी आधुनिकता के चक्कर में स्वास्थ्य का ध्यान रखे बिना विदेशी व्यंजनों को अपनाते जा रहे हैं।

Scanned with CamScanner

iii. खानपान के मामले में स्थानीयता का क्या अर्थ है ? (21)

उत्तर – खानपान के मामले में स्थानीयता का अर्थ है – किसी क्षेत्र या स्थान विशेष पर खाये - खिलाये जाने वाले व्यंजन तथा पकवान, ये व्यंजन या पकवान उस क्षेत्र की संस्कृति के प्रतीक भी होते हैं। जैसे - इडली - डोसा - बड़ा साँभर - रसम दक्षिण भारत के स्थानीय व्यंजन व पकवान हैं।

भाषा की बात –

i. नीचे द्वन्द्व समास के कुछ उदाहरण दिये गये हैं। इनको वाक्य में प्रयोग कीजिए तथा अर्थ समझिए –

(क) सीना - पिरोना – (सिलाई और उससे जुड़े काम) – उसे किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि उसे सीना-पिरोना आता है।

(ख) भला - बुरा – (अपना हित - अहित) - दूसरों पर कब तक आश्रित रहोगे, तुम अपना भला बुरा कब सोचोगे ?

(ग) चलना - फिरना – (घूमना - फिरना) – कार से दुर्घटनाग्रस्त होने के चार महीने बाद उसने फिर से चलना - फिरना शुरू किया।

(घ) लंबा - चौड़ा – (विशाल आकार वाला) – इतना लंबा - चौड़ा पुल मैं पहली बार देख रहा हूँ।

(ङ) कहा - सुनी – (नाराजगी भरी बातचीत) – देखो मोहन ! इस कहा-सुनी में कुछ नहीं रखा है, मैंने समझाते हुए कहा।

(च) घास - फूस – (बेकार की वस्तुएँ) – खाने के नाम पर तुम क्या घास - फूस उठा लाये।

ii. कई बार एक शब्द पढ़ने या सुनने पर कोई और शब्द याद आ जाता है। आइये शब्दों की ऐसी कड़ी बनाये।

उत्तर – इडली - दक्षिण, केरल - ओणम - चावल।
छुट्टी - आराम, आम - दशहरी - मलीहाबाद।
साड़ियाँ - बनारसी, ताजमहल - आगरा।
लाल किला - दिल्ली, ब्रह्माजी का मंदिर - पुष्कर।
संगम - प्रयाग, इलाहाबाद - - आदि।

बहुविकल्पीय प्रश्न –

i. 'ढाबा संस्कृति' इनमें से किससे संबंधित है ?

(क) उत्तर भारत (ख) पश्चिमी भारत (ग) पूर्वी भारत (घ) दक्षिण भारत।

उत्तर – (क)

ii. इनमें से किसे फास्ट-फूड के नाम से जाना जाता है?
(क) पूड़ी (ख) बर्गर (ग) सारा (घ) रोटी। उत्तर-(ख)
iii. ढोकला-गाठिया किस प्रांत के स्थानीय व्यंजन हैं?
(क) राजस्थान (ख) महाराष्ट्र (ग) गुजरात (घ) मध्यप्रदेश। उत्तर-(ग)
iv. अन्य प्रदेशों के व्यंजन-पकवान के कारण किस वर्ग के भोजन में विविधता आ चुकी है?
(क) मध्यम वर्ग (ख) निम्नवर्ग (ग) उच्चवर्ग (घ) अति निम्न वर्ग।
उत्तर-(क)
v. खानपान की बदली पीढ़ी से कौन सर्वाधिक प्रभावित हुआ है?
(क) पुरानी पीढ़ी (ख) नयी पीढ़ी (ग) आनेवाली पीढ़ी (घ) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर-(ख)

15. नीलकंठ
(महादेवी वर्मा)

शब्दार्थ - संकेत = इशारा, तथ्य = वास्तविकता, अनुसरण करना = पीछे-पीछे चलना, संकीर्ण = पतला, पक्षी-शावक = चिड़िया के बच्चे, बारहा = अनेक प्रकार/बार, खासियत = विशेषता, मूँजी = कंजूस, मुनासिब = उचित, सुरखाब = लाल रंग, ऐरे-गैरे = तुच्छ, हीन, मार्जारी = मादा बिल्ली, कायाकल्प = रूप परिवर्तन, कौतूहल = जिज्ञासा, बंकिम = टेढ़ा, पैनी = धारदार, द्युति = किरण, वाम = बायाँ, उद्दीप्त = चमकना, रंजित = रंग दिया, सहचारिणी = सहेली, चंचु-प्रहार = चोंच द्वारा आक्रमण, आर्तक्रंदन = दर्द भरी आवाज में रोना, अधर = बीच में, कर्णवेध = कान छेदना, निश्चेष्ट = बिना हिले-डुले, केका = मोर की आवाज, भाता = अच्छा लगता, भंगिमा = मुद्रा, सजल = जलयुक्त, सोपान = सीढ़ी, तन्मय = एकाग्रचित, खरमास = पशु-पक्षियों के खरीदने-बेचने का स्थान, स्तबक = गुलदस्ता,

प्रश्नोत्तर -

i. मोर-मोरनी के नाम किस आधार पर रखे गये?
उत्तर- मोर की गर्दन नीली चमकदार थी इसलिए उसका नाम नीलकंठ और छाया के समान साथ में रहने के कारण मोरनी का नाम ~~कुब्जी~~ राधा रखा गया।
ii. जाली के बड़े घर में पहुँचने पर मोर के बच्चों का किस प्रकार स्वागत हुआ?
उत्तर - जाली के बड़े घर में मोर के बच्चों को पहुँचते ही वहाँ हलचल

होने लगी। अन्य जीवों को वैसा ही कौतूहल हुआ जैसे नववधू के आगमन पर परिवार के बाकी सदस्यों का होता है। कबूतर, खरगोश उनके आसपास आकर देखने परखने लगे। छोटे खरगोश उनके आस पास उछलकूद मचाने लगे। तोते मानो सही निरीक्षण के लिए एक आँख बंद करके उन्हें देखने लगे।

iii. लेखिका को नीलकंठ की कौन-कौन सी चेष्टाएँ बहुत भाती थी?

उत्तर - लेखिका को नीलकंठ की निम्नलिखित चेष्टाएँ भाती थी:-

क) पंखों का सतरंगी मंडलाकार छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़े हो जाना। हथेली पर रखे हुए भुने चने कोमलता से हौले-हौले उठा कर खाना। मेघ गर्जन के ताल पर नृत्य करना और वर्षा के बूँदों की रिमझिमाहट तेज होने पर उसका वेग बढ़ते जाना।

iv. 'इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा' वाक्य किस घटना की ओर संकेत कर रहा है?

उत्तर - "इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा" वाक्य निलकंठ और राधा के प्रेम और आनंद भरे जीवन में कुब्जा के आगमन की ओर संकेत कर रहा है। नीलकंठ और राधा खुशी-खुशी अपना वक्त गुजार रहे थे कि कुब्जा ने आकर उनके जीवन की सारी प्रसन्नता का अंत कर दिया। वह किसी अन्य जीव को भी नीलकंठ के पास नहीं जाने देती थी। वह चाहती थी कि नीलकंठ केवल उसके साथ रहे लेकिन नीलकंठ उससे दूर भागता रहता था। कुब्जा ने उनके शांतिपूर्ण जीवन में ऐसा कोलाहल मचाया कि बेचारे नीलकंठ के जीवन का ही अंत हो गया।

v. वसंत ऋतु में नीलकंठ के लिए जालीघर में बंद रहना असहनीय क्यों हो जाता था?

उत्तर - नीलकंठ को फलों के वृक्ष से अधिक फूलों से लदे हुए पत्तों वाले वृक्ष भाते हैं। वसंत ऋतु में जब आम के वृक्ष सुनहरी मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नये लाल पल्लवों से ढँक जाता था तब जाली घर में वह इतना अस्थिर और बेचैन हो उठता था कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता था।

vi. जालीघर में रहने वाले सभी जीव एक-दूसरे के मित्र बन गए थे, पर कुब्जा के साथ ऐसा संभव क्यों नहीं हो पाया?

उत्तर - कुब्जा का स्वभाव अपने नाम के अनुरूप ही था। वह राधा और नीलकंठ की मित्रता से ईर्ष्या रखती थी। वह स्वयं नीलकंठ के साथ रहना चाहती थी। अपने ईर्ष्यालु स्वभाव और द्वेष-भावना के कारण वह अन्य जीव-जन्तुओं का मित्र न बन सकी।

vii. नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को साँप से किस प्रकार बचाया? इस घटना के आधार पर नीलकंठ के स्वभाव की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - साँप ने शिशु खरगोश के शरीर का पिछला हिस्सा मुँह में दबा लिया था। शिशु खरगोश चीं-चीं करता हुआ चीख रहा था। नीलकंठ दूर ऊपर झूले में सो रहा था। खरगोश की आवाज सुनकर एक ही झटके में वह नीचे आ गया। अपनी सहज चेतना से ही वह समझ गया कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश घायल हो सकता है, इसलिए उसने साँप के फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतना मारा कि साँप अधमरा हो गया, खरगोश उसके पंजों से छूट तो गया, पर बेसुध सा वहीं पड़ा रहा। साँप का काम तमाम कर नीलकंठ खरगोश के पास गया और रातभर उसे अपने पंखों के नीचे रखे गर्मी देता रहा। इस घटना से नीलकंठ के स्वभाव की कई विशेषताओं का पता चलता है। वह वीर, साहसी, था तथा उसमें मानवीय भावनाएँ भी विद्यमान थीं, अपने साथियों के प्रति प्रेम और उनकी रक्षा का ख्याल भी उसे था।

भाषा की बात -

i. नीचे लिखे शब्दों से अन्य शब्द बनाओ - गंध, रंग, फल, ज्ञान।

उत्तर - गंध - सुगंध, दुर्गंध, गंधहीन, गंधरहित।

रंग - बदरंग, नवरंग, रंगीन, रंगीला, सुरंग।

फल - सफल, निष्फल, फलदार, फलहीन, फलाहार।

ज्ञान - अज्ञान, विज्ञान, संज्ञान, ज्ञानगंगा, ज्ञानवान।

ii. नीचे दिये गये शब्दों के संधि-विग्रह कीजिए।

संधि	विग्रह
नील + आभ = नीलाभ	सिंहासन = सिंह + आसन
नव + आगंतुक = नवागंतुक	मेघाच्छन्न = मेघ + आच्छन्न।

Scanned with CamScanner

सन्धि — दो वर्णों के मेल से होनेवाले विकार को सन्धि कहते हैं। जैसे अ + ई = ए, देव + इन्द्र = देवेन्द्र।

सन्धि के भेद — (I) स्वर संधि - दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप-परिवर्तन को 'स्वरसन्धि' कहते हैं। जैसे - शिव + आलय = शिवालय

स्वर सन्धि के प्रकार - (क) दीर्घ स्वर सन्धि - दो सवर्ण स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। जैसे, अ + अ = आ, अन्न + अभाव = अन्नाभाव।

(ख) गुण स्वर संधि - यदि 'अ' या 'आ' के बाद इ, ई, उ, ऊ या ऋ आये तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाते हैं। जैसे-
अ + ई = ए, देव + ईश = देवेश, अ + उ = ओ - चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय, अ + ऋ = अर् - देव + ऋषि = देवर्षि।

(ग) वृद्धि संधि - यदि अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो दोनों के स्थान में ऐ, ओ या औ आये तो दोनो के स्थान पर औ हो जाता है, जैसे - अ + औ = औ - परम + औषध = परमौषध।

(घ) यण् सन्धि - यदि इ, ई, उ, ऊ या ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो इ-ई का य्, उ-ऊ का व्, और ऋ का र् हो जाता है। जैसे-
इ + अ = य् - यदि + अपि = यद्यपि, इ + उ = व् - अति + उत्तम = अत्युत्तम, अनु + अय = अन्वय, ऋ + आ = र् - पितृ + आदेश = पित्रादेश।

(ङ) अयादि सन्धि - यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव्, तथा औ का आव् हो जाता है। जैसे - ने + अन = नयन, नै + अक = नायक, पो + अन = पवन, पौ + अक = पावक।

II. व्यंजन संधि - व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे - दिक् + गज = दिग्गज।

नियम - (क) यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आये या य, र, ल, व या कोई स्वर आये तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान में अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे-
अच् + अन्त = अजन्त, सत् + वाणी = सद्वाणी, जगत् + आनंद = जगदानंद।

(ख) यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद न या म हो तो क्, च्, ट्, त्, प् अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाता है। जैसे - उत् + नति = उन्नति।

(ग) यदि म् के बाद कोई स्पर्श व्यंजन हो तो म् का अनुस्वार या बादवाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है। जैसे - अहम् + कार = अहँकार, अहङ्कार
किम् + चित = किंचित, किञ्चित।

Scanned with CamScanner

(घ) यदि 'त्-द्' के बाद 'ल' रहे तो त्-द् 'ल' में बदल जाता है तथा 'न्' के बाद 'ल' रहे तो 'न्' का अनुनासिक के साथ 'ल्' हो जाता है। जैसे-
उत् + लास = उल्लास, महान + लाभ = महाँल्लाभ ।

(ङ) यदि वर्गों के अंतिम वर्णों को छोड़ शेष वर्णों के बाद 'ह्' आये तो 'ह्' पूर्व वर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है तथा 'ह्' के पूर्व वाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे - उत् + हत = उद्धत, वाक् + हरि = वाग्घरि ।

(च) ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' हो तो 'छ' के पहले 'च्' जुड़ जाता है। दीर्घ स्वर के बाद 'छ' होने पर यह विकल्प से होता है। जैसे -
परि + छेद = परिच्छेद, शाला + छादन = शालाच्छादन ।

विसर्ग संधि - विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे -
धनु + टंकार = धनुष्टंकार, निः + चय = निश्चय ।

नियम - (क) यदि विसर्ग के बाद 'च-छ' हो तो विसर्ग का 'श्', 'ट-ठ' हो तो 'ष्' तथा 'त-थ' हो तो 'स्' हो जाता है। जैसे -
निः + छल = निश्छल, ततः + ठकार = ततष्ठकार, निः + तार = निस्तार ।

(ख) यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार आये और विसर्ग के बाद का वर्ण क, ख, प, फ हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है। जैसे -
निः + पाप = निष्पाप, निः + फल = निष्फल ।

(ग) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में क, ख, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग ज्यों का त्यों रह जाता है। जैसे - प्रातः + काल = प्रातः काल ।

(घ) यदि 'इ-उ' के बाद विसर्ग हो तथा उसके बाद 'र' आये तो 'इ-उ' का क्रमशः ई, ऊ हो जाता है और विसर्ग लुप्त हो जाता है। जैसे -
निः + रस = नीरस, निः + रोग = नीरोग।

(ङ) यदि विसर्ग के पहले अ और आ को छोड़कर कोई दूसरा वर्ण आये और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' हो जाता है। जैसे - दुः + गन्ध = दुर्गन्ध, निः + जल = निर्जल, निः + धन = निर्धन ।

(च) यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है तथा यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण संधि द्वारा 'ओ' हो जाता है। जैसे - मनः + रथ = मनोरथ।

(छ) यदि विसर्ग के आगे-पीछे 'अ' हो तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर ओकार और बादवाले 'अ' का लोप होकर उसके स्थान पर लुप्ताकार (ऽ) का चिन्ह लग जाता है। जैसे - प्रथमः + अध्याय: = प्रथमोऽध्याय:, यशः + अभिलाषी = यशोऽभिलाषी।

Scanned with CamScanner

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द –

जिसके पाणि में चक्र हो – चक्रपाणि, जिसके चार भुजाएँ हैं – चतुर्भुज, जिसके दश आनन हैं – दशानन, जिसके आने की तिथि न हो – अतिथि, जिसके शेखर पर चन्द्र हो – चन्द्रशेखर, जिसके समान दूसरा न हो – अद्वितीय, जिसके पार देखा जा सके – पारदर्शक, जिसके हृदय में ममता न हो – निर्मम, जिसके हृदय में दया न हो – निर्दय, जिसकी ग्रिवा सुंदर हो – सुग्रीव, जिसके दो पैर हैं – द्विपद, जो सर्वशक्ति सम्पन्न हो – शक्तिमान, जिसका कोई नाथ न हो – अनाथ, जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो – अजातशत्रु, जो पृथ्वी से सम्बद्ध है – पार्थिव, जिसकी उपमा न हो – अनुपम, जो कम जानता है – अल्पज्ञ, जो कुछ नहीं जानता है – अज्ञ, जो मृग के गर्भ का हाल जानता हो – मृगर्भवेत्ता, स्वेद से उत्पन्न होनेवाला – स्वेदज, जो सबमें व्याप्त है – सर्वव्यापी, इन्द्रियों को जीतनेवाला – जितेन्द्रिय, जो स्त्री के वशीभूत हो – स्त्रैण, भविष्य में होनेवाला – भावी, जो कला जानता है – कलाविद, कलाकार, जो सरो से जन्मता है सरसिज, जो पर के अधीन है – पराधीन, जो देखने में प्रिय लगता है – प्रियदर्शी, आया हुआ – आगत, लोक का – लौकिक, परलोक का – परलौकिक, जो स्त्री अभिनय करे – अभिनेत्री, जो दूसरों से ईर्ष्या करता है – ईर्ष्यालु,

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द –

अविराम = लगातार	फन = कला	वर्ण = रंग, अक्षर, जाति
अभिराम = सुंदर	फण = साँप का फण	व्रण = घाव
अंगना = स्त्री	बलि = बलिदान	सर = तालाब
अँगना = घर का आँगन	बली = बलवान	शर = बाण
आसन्न = निकट	बदन = शरीर	शुचि = पवित्र
आसन = बैठने की वस्तु	वदन = मुख	सूची = तालिका
असन = भोजन	बान = आदत	शाला = घर
कुल = वंश	बाण = तीर	साला = पत्नी का भाई
कूल = किनारा	मास = महीना	सुधी = विद्वान
तरणी = नाव	माँस = गोश्त	सुधि = याद
तरुणी = युवति	राज = शासन	सूत = धागा
तरणि = सूर्य	राज = रहस्य	सुत = पुत्र
परिक्षा = कीचड़	लक्ष = लाख.	सहर = सवेरा
परीक्षा = इम्तहान	लक्ष्य = उद्देश्य	शहर = नगर

Scanned with CamScanner

विपरीतार्थक शब्द

अवनति = उन्नति, घात = प्रतिघात, अमर = नश्वर, ख्यात = कुख्यात, गद्य = पद्य, आदि = अंत, कल्पित = वास्तविक, गृही = संन्यासी, अनुग्रह = निग्रह, गुरु = लघु, चल = अचल, अंतरंग = बहिरंग, चर = अचर, अनुकूल = प्रतिकूल, चंचल = शांत, अधम = उत्तम, ज्येष्ठ = कनिष्ठ, जड़ = चेतन, अपेक्षा = उपेक्षा, अकाल = सुकाल, अनुरक्त = विरक्त, विधि = निषेध, प्रवृत्ति = निवृत्ति, आस्था = अनास्था, निषिद्ध = विहित, आगत = निर्गत, सापेक्ष = निरपेक्ष, इहलोक = परलोक, प्रलय = सृष्टि, सूक्ष्म = स्थूल, कटु = मधु।

पर्यायवाची शब्द — अमृत - सुधा, मधु, पीयूष। असुर - दानव, राक्षस, दैत्य, इच्छा - कामना, मनोरथ, आकांक्षा। उन्नति - उत्थान, विकास, उत्कर्ष। कामदेव - मदन, अनंग, मन्मथ। किरण - रश्मि, मयूख, मरीचि। किनारा - तट, तीर, कूल। चतुर - चालाक, निपुण, प्रवीण, चोर - खनक, कुंभिल। दुःख = वेदना, कष्ट, पीड़ा। यमुना = कालिंदी, कृष्णा, धन = सम्पत्ति, दौलत, ऐश्वर्य। नाव = तरणी, नौका, जलयान। नरक = यमलोक, कुंभीपाक, रौरव। प्रकाश = ज्योति, चमक, आलोक। बिजली = चपला, दामिनी, सौदामिनी। भ्रमर = अलि, भौंरा, मधुकर। मछली = मीन, मत्स्य, सफरी। मृत्यु = मौत, मरण, देहांत। मोक्ष = निर्वाण, मुक्ति, परमपद

क्रिया से भाववाचक संज्ञा बनाइए — कहना = कथन, खोजना = खोज, जोड़ना = जोड़, खाना-पीना = खान-पान, जीतना = जीत, सजाना = सजावट, कमाना = कमाई, माँगना = माँग, घबराना = घबराहट, पीसना = पिसाई बचना = बचाव, समझना = समझ, देना = देन, धोना = धुलाई, हँसना = हँसी

विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाइए - अधिक = आधिक्य, उपयोगी = उपयोगिता, ऊँचा = ऊँचाई, खुश = खुशी, गरीब = गरीबी, गुरु = गुरुत्व, कुशल = कुशलता, चतुर = चतुराई, चिकना = चिकनाहट, जटिल = जटिलता जातीय = जातीयता, तीव्र = तीव्रता, दीन = दीनता, दयालु = दयालुता बूढ़ा = बुढ़ापा, भारतीय = भारतीयता, भावुक = भावुकता, प्राचीन = प्राचीनता रक्त = रक्तता, राष्ट्रीय = राष्ट्रीयता, लघु = लघुता, लाल = लालिमा विधवा = वैधव्य, सभ्य = सभ्यता, स्वीकृत = स्वीकृति, हार्दिक = हार्दिकता,

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाइए - जाति = जातीयता, भाई = भाईचारा, पशु = पशुत्व, लड़का = लड़कपन, जवान = जवानी, बच्चा = बचपन, मनुष्य = मनुष्यत्व, पुरुष = पौरुष, अंधा = अंधत्व, नारी = नारीत्व, पात्र = पात्रता, स्त्री = स्त्रीत्व, मित्र = मित्रता।

Scanned with CamScanner

कक्षा - 7
महाभारत

1. जरासंध कौन था ?

उत्तर - जरासंध मगध देश का सम्राट था ।

2. कंस कौन था ?

उत्तर - कंस मथुरा का राजा तथा उग्रसेन का पुत्र और जरासंध का दामाद था ।

3. जरासंध को किसने मारा ?

उत्तर - जरासंध को भीमसेन ने मारा ।

4. शकुनि कौन था ?

उत्तर - शकुनि गंधार का नरेश था तथा कुरुवंश सम्राट धृतराष्ट्र का साला था और गंधारी का भाई तथा दुर्योधन का मामा था ।

5. चौसर के खेल में कौन निपुण था ?

उत्तर - चौसर खेल में शकुनि निपुण था ।

6. चौसर खेल के लिए क्या बिछा हुआ था ?

उत्तर - चौसर खेल के लिए चौपड़ बिछा हुआ था ।

7. खेल देखने के लिए किसने पाँडवों को न्योता भेजा तथा उस न्योता को लेकर कौन पाँडवों के पास गया ?

उत्तर - खेल देखने के लिए धृतराष्ट्र ने पाँडवों को न्योता भेजा तथा उस न्योता को लेकर विदुर पाँडवों के पास गये थे ।

8. किसने यह बात कहा कि मेरे जगह पर मेरी ओर से मामा शकुनि खेलेंगे ?

उत्तर - मेरे तरफ मेरे मामा यह खेल खेलेंगे यह बात दुर्योधन ने कहा ।

9. उस खेल-मंडप में कौन-कौन उपस्थित थे ?

उत्तर - उस खेल-मंडप में द्रोण, भीष्म, कृपाचार्य, विदुर, धृतराष्ट्र जैसे वयोवृद्ध भी उपस्थित थे ।

10. कौन बड़े चाव से खेल को देख रहे थे ?

उत्तर - कौरव बड़े चाव से उस खेल को देख रहे थे ।

11. युधिष्ठिर ने अपने किस भाई को जुए में हार गया ?

उत्तर - युधिष्ठिर ने अपने भाई नकुल को जुए के दाँव पर लगा दिया ।

Scanned with CamScanner

12. युधिष्ठिर का कौन सा भाई सारी विद्याओं में पारंगत था ?
उत्तर - सहदेव जो युधिष्ठिर का भाई था, सारी विद्याओं में पारंगत था।
13. विदुर को किसने रनवास में आकर द्रौपदी को खेलमंडप में लाने को कहा ?
उत्तर - दुर्योधन ने विदुर को आदेश दिया कि आप रनवास में चले जाये तथा द्रौपदी को यहाँ लाये।
14. दुर्योधन के सारथी का नाम क्या था ?
उत्तर - दुर्योधन के सारथी का नाम प्रातिकामी था।
15. दुरात्मा दुःशासन ने द्रौपदी को खेल-मंडप में कैसे लाया ?
उत्तर - दुरात्मा दुःशासन ने द्रौपदी के गुँथे बाल बिखेर दिये गहने तोड़-फोड़ दिये और उसके बाल पकड़कर बलपूर्वक घसीटता हुआ द्रौपदी को खेल-मंडप में ले आया।
16. किसने कहा कि युधिष्ठिर के लिए चौसर का खेल न्यायोचित नहीं था ?
उत्तर - धृतराष्ट्र के एक पुत्र विकर्ण ने कहा कि युधिष्ठिर के लिए चौसर का खेल न्यायोचित नहीं था।
17. खेल-मंडप में द्रौपदी का वस्त्र कौन खींच रहा था ?
उत्तर - दुःशासन खेल मंडप में द्रौपदी का वस्त्र खींच रहा था।
18. भीमसेन ने क्या प्रतिज्ञा की ?
उत्तर - क्रोध में आकर भीमसेन ने प्रतिज्ञा की, "उपस्थित सज्जनों में शपथ खाकर कहता हूँ कि जबतक भरतवंश पर बट्टा लगानेवाले इस दुरात्मा दुःशासन की छाती चीर न लूँगा, तबतक इस संसार को छोड़कर नहीं जाऊँगा।"
19. किसने द्रौपदी को बुलाकर सांत्वना दी तथा युधिष्ठिर को अजातशत्रु कहा ?
19. धृतराष्ट्र ने द्रौपदी को प्रेमपूर्वक अपने पास बुलाकर उसे सांत्वना दी तथा युधिष्ठिर को अजातशत्रु से संबोधित किया।
20. दूसरी बार चौपड़ खेल की क्या शर्त थी ?
उत्तर - दूसरी बार चौपड़ खेल में यह शर्त थी कि, "हारा हुआ दल अपने भाइयों के साथ बारह वर्ष तक वनवास करेगा तथा उसके उपरांत एक वर्ष अज्ञातवास में रहेगा। यदि इस एक वर्ष में उसका पता चल जाएगा, तो उन सबको बारह वर्ष का वनवास फिर से भोगना होगा।"

Scanned with CamScanner